भट्टारक गुणचन्द्र

जीवन-परिचय : भट्टारक गुणचन्द्र भट्टारक रत्नकीर्ति के प्रशिष्य और भट्टारक यश:कीर्ति के शिष्य थे। गुणचन्द्र का पट्टाभिषेक साँवला गाँव में हुआ था।

भट्टारक गुणचन्द्र संस्कृत और हिन्दी भाषा के विद्वान कवि थे।

इनका समय विक्रम संवत् 1630 से 1653 बताया गया है। इनका स्वर्गवास सागवाड़ा में विक्रम संवत् 1653 में हुआ है।

रचना-परिचय : भट्टारक गुणचन्द्र की संस्कृत और हिन्दी दोनों ही भाषाओं में रचनाएँ पायी जाती हैं।

(क) संस्कृत रचना :

1. अनन्तनाथ पूजा, 2. मौनव्रतकथा,

(ख) हिन्दी रचना :

1. दयारसरास, 2. राजमतिरास, 3. आदित्यव्रतकथा, 4. बारहमासा, 5. बारहव्रत, 6. विनती, 7. स्तुति नेमिचन्द, 8. ज्ञानचेतनानुप्रेक्षा, 9. फुटकर पद।